

陈虹 倪泰一译

上古三大奇书《黄帝内经》远古精要本●酉

庚续著

難經

中国古代医库奇书

〔战国〕秦越人著
〔元〕滑寿注释

西南师范大学出版社

《黃帝內經》精要
远古实用普及本

難 经

附白话全译

〔战国〕秦越人 原著
〔元〕滑 寿 注释
陈 虹 倪泰一 译

西南师范大学出版社

(川)新登字 019 号

责任编辑:郭昌瑜
装帧设计:刘学伟

中国古代异库奇书·难经
陈虹 倪泰一 编

西南师范大学出版社出版、发行
(重庆 北碚)

全国新华书店经销
重庆电力印刷厂印刷

*

开本:787×1092 1/32 印张:10.50 插页:2 字数:227千
1994年12月 第一版 1994年12月 第1次印刷
印数:1—10000

*

ISBN 7—5621—1195—2/R·10

• 定价:7.80 元

— 前 言 —

上古三大奇书之一的《黄帝内经》，被中国古代高士和民间方士视为医之大经大法，后世诸方书皆本于此。但其中，唯有《难经》，被认为是继《黄帝内经》而起的医经之正宗。事实正是，《难经》采摘《黄帝内经》全书的精要而成，是简古渊涵的《黄帝内经》在古代的实用普及本，甚至《难经》对人身脏腑情况的论述比《黄帝内经》更为详细，更接近现代医学解剖学对人体的认识和了解。

有人甚至认为，正是《难经》的出现，才使《黄帝内经》深刻阐明的尊生、疗疾之大理，具有了人人可以在日常生活中实际采用的可贵价值，它对后世医技的贡献之巨大，别的医著几乎无法与之相提并论。特别是它对经络的运行情况、作用和切脉的方法的发现，及其易于理解的阐述，使中国古代学士和普通民众同时具有了诊治病疾、养调生命的一般常识。《难经》几乎就是《黄帝内经》在民间的一个易于常人阅读的范本，它讲述了健康与时令、季候的微妙联系，提供了四时养生、疾病诊疗的具体经验和知识，是一本了解阴阳五行与人身五脏的对应关系的精典名著。这就是在《黄帝内经》之后，我们编译《难经》的原因之所在。就其两本精典的关系而言，《难经》和《黄帝内经》几乎也是缺一不可的。

由于我们学识的有限，在白话翻译中难免会有解读不足之处，我们也真诚地希望得到专家和众学者的批评指正。另外，还应指出的是，我们的工作还得到××先生和李怡女士的帮助，谨在此致以衷心的谢意。

译 者

1994年7月16日

中国古代异库奇书
难经·原本目录

| | |
|---------------|------|
| 难经本义自序 | (3) |
| 难经原本·卷上 | (4) |
| 一 难 | (5) |
| 二 难 | (8) |
| 三 难 | (10) |
| 四 难 | (13) |
| 五 难 | (15) |
| 六 难 | (17) |
| 七 难 | (18) |
| 八 难 | (21) |
| 九 难 | (23) |
| 十 难 | (24) |
| 十一难 | (26) |
| 十二难 | (28) |
| 十三难 | (30) |
| 十四难 | (33) |
| 十五难 | (37) |
| 十六难 | (41) |

难经·目录

| | |
|---------|------|
| 十七难 | (44) |
| 十八难 | (46) |
| 十九难 | (49) |
| 二十难 | (51) |
| 二十一难 | (52) |
| 二十二难 | (53) |
| 二十三难 | (55) |
| 二十四难 | (58) |
| 二十五难 | (61) |
| 二十六难 | (64) |
| 二十七难 | (66) |
| 二十八难 | (68) |
| 二十九难 | (70) |
| 三十难 | (72) |
| | |
| 难经原本·卷下 | (74) |
| 三十一难 | (75) |
| 三十二难 | (77) |
| 三十三难 | (79) |
| 三十四难 | (82) |
| 三十五难 | (84) |
| 三十六难 | (86) |
| 三十七难 | (88) |
| 三十八难 | (90) |
| 三十九难 | (91) |
| 四十难 | (93) |

| | |
|------|-------|
| 四十一难 | (95) |
| 四十二难 | (96) |
| 四十三难 | (98) |
| 四十四难 | (100) |
| 四十五难 | (101) |
| 四十六难 | (103) |
| 四十七难 | (104) |
| 四十八难 | (106) |
| 四十九难 | (108) |
| 五十难 | (111) |
| 五十一难 | (113) |
| 五十二难 | (114) |
| 五十三难 | (115) |
| 五十四难 | (117) |
| 五十五难 | (119) |
| 五十六难 | (121) |
| 五十七难 | (124) |
| 五十八难 | (126) |
| 五十九难 | (129) |
| 六十难 | (130) |
| 六十一难 | (132) |
| 六十二难 | (135) |
| 六十三难 | (136) |
| 六十四难 | (137) |
| 六十五难 | (139) |
| 六十六难 | (140) |

难经·目录

| | |
|-----------|-------|
| 六十七难..... | (143) |
| 六十八难..... | (145) |
| 六十九难..... | (147) |
| 七十难..... | (148) |
| 七十一难..... | (150) |
| 七十二难..... | (151) |
| 七十三难..... | (153) |
| 七十四难..... | (155) |
| 七十五难..... | (157) |
| 七十六难..... | (160) |
| 七十七难..... | (161) |
| 七十八难..... | (162) |
| 七十九难..... | (164) |
| 八十难..... | (166) |
| 八十一难..... | (167) |

中国古代异库奇书
难经·白话目录

| | |
|---------|-------|
| 难经本义自序 | (171) |
| 难经白话·卷上 | (172) |
| 一 难 | (173) |
| 二 难 | (177) |
| 三 难 | (179) |
| 四 难 | (182) |
| 五 难 | (184) |
| 六 难 | (186) |
| 七 难 | (187) |
| 八 难 | (189) |
| 九 难 | (190) |
| 十 难 | (191) |
| 十一难 | (192) |
| 十二难 | (193) |
| 十三难 | (195) |
| 十四难 | (198) |
| 十五难 | (203) |
| 十六难 | (208) |

难经·目录

| | |
|-------------|-------|
| 十七 难 | (211) |
| 十八 难 | (213) |
| 十九 难 | (217) |
| 二十 难 | (219) |
| 二十一 难 | (220) |
| 二十二 难 | (221) |
| 二十三 难 | (222) |
| 二十四 难 | (225) |
| 二十五 难 | (228) |
| 二十六 难 | (230) |
| 二十七 难 | (231) |
| 二十八 难 | (233) |
| 二十九 难 | (236) |
| 三十 难 | (238) |
| 难经白话·卷下 | (240) |
| 三十一 难 | (241) |
| 三十二 难 | (243) |
| 三十三 难 | (244) |
| 三十四 难 | (247) |
| 三十五 难 | (249) |
| 三十六 难 | (251) |
| 三十七 难 | (252) |
| 三十八 难 | (255) |
| 三十九 难 | (256) |
| 四十 难 | (257) |

难经·目录

| | |
|------|-------|
| 四十一难 | (258) |
| 四十二难 | (259) |
| 四十三难 | (261) |
| 四十四难 | (262) |
| 四十五难 | (263) |
| 四十六难 | (265) |
| 四十七难 | (266) |
| 四十八难 | (267) |
| 四十九难 | (269) |
| 五十 难 | (273) |
| 五十一难 | (274) |
| 五十二难 | (275) |
| 五十三难 | (276) |
| 五十四难 | (278) |
| 五十五难 | (279) |
| 五十六难 | (280) |
| 五十七难 | (284) |
| 五十八难 | (286) |
| 五十九难 | (289) |
| 六十 难 | (290) |
| 六十一难 | (291) |
| 六十二难 | (294) |
| 六十三难 | (295) |
| 六十四难 | (296) |
| 六十五难 | (298) |
| 六十六难 | (299) |

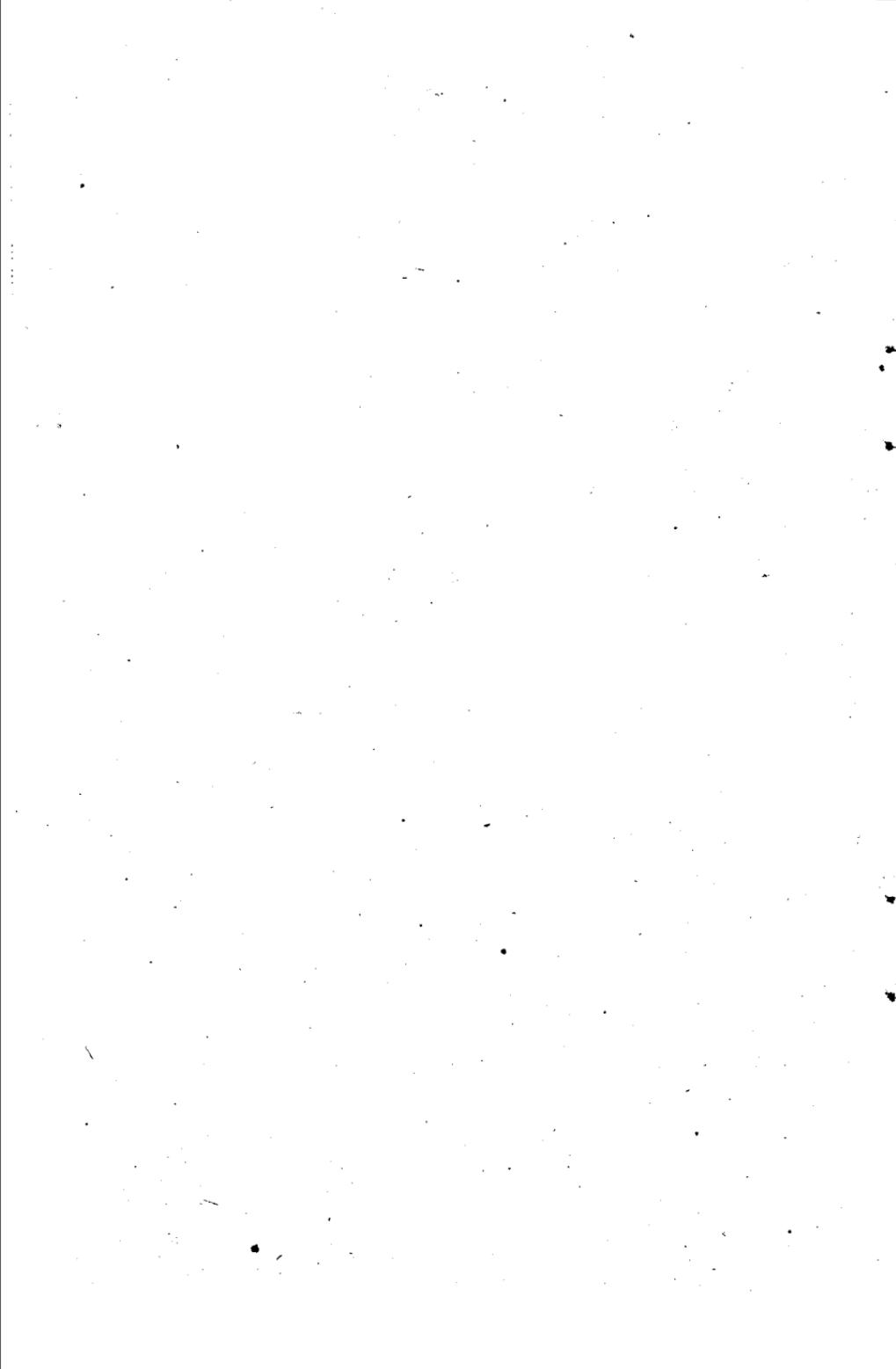
难经·目录

| | |
|------|-------|
| 六十七难 | (302) |
| 六十八难 | (303) |
| 六十九难 | (305) |
| 七十难 | (306) |
| 七十一难 | (308) |
| 七十二难 | (309) |
| 七十三难 | (311) |
| 七十四难 | (312) |
| 七十五难 | (314) |
| 七十六难 | (317) |
| 七十七难 | (318) |
| 七十八难 | (319) |
| 七十九难 | (321) |
| 八十难 | (323) |
| 八十一难 | (324) |

难经本义自序

难经本义者，许昌滑寿本难经之义而为之说也。难经相传为渤海秦越人所著，而史记不载，隋唐书经籍艺文志，乃有秦越人黄帝八十一难经二卷之目，岂其时门人子弟，私相授受，太史公偶不及见之耶？考之史记，正义及诸家之说，则为越人书不诬矣。盖本黄帝素问灵枢之旨，设为问答，以释疑义，其间荣卫度数、尺寸部位、阴阳王相、脏腑内外、脉法病能，与夫经络流注、针刺俞穴，莫不该备、约其辞，博其义，所以扩前圣而启后贤，为生民虑者，到深切也。历代以来，注家踵，无虑数十，然或失之繁，或失之简，醇疵淆混，是非攻击，且其书经华佗煨烬之餘，缺文错简，不能无遗憾焉。夫天下之事，循其故则其道立，浚其源则其流长，本其义而不得其旨者，未之有也。若上古易书本为卜筮，设子朱子推原象占。作为本义，而四圣之心以明，难经本义，窃取诸此也。是故考之枢素，以探其原，达之仲景叔和，以绎其绪，凡诸说之善者，亦旁搜而博致之；缺文断简，则委曲以求之，仍以先儒释经之变例而传疑焉。呜呼！时有先后，理无古今，得其义斯得其理，得其理则作者之心旷百世而不外矣。虽然，斯义也，不敢自谓其已至也。后之君子见其不逮，改而正之，不亦宜乎。

至正辛丑秋九月己酉朔自序



難經 · 原本

難經 · 原本

卷上

一难

一难曰：
十二经皆有动脉，独取寸口，
以决五脏六腑死生吉凶之法，何谓也？

十二经，
谓手足三阴三阳，合为十二
经也。手经则
大阴肺，阳明
大肠，少阴心，
大阳小肠，厥
阴心包，少阳
三焦也；足经
则太阴脾，阳明
胃，少阴肾，
大阳膀胱，厥
阴肝，少阳胆
也。皆有动脉

